कलियुग के चमत्कारी देव : झुंझनूंवाले बाबा गंगाराम

भारत भूमि का कोना–कोना परम पवित्र एंव आध्यात्मिकता के तेज से परिपूर्ण है। समय–समय पर इस पावन धरा पर ईश्वर अवतार लेकर मानव रूप में क्रीड़ा करते हैं और धर्म की पुनः पुनः स्थापना करते हैं। उनके आचरण और दिव्य प्रेरणा से लोग लाभान्वित होते हैं और मनोकामनायें पूर्ण करते हैं ।

बाबा गंगाराम का अवतरण और लीलाएं

ऐसे ही दिव्य अवतारी बाबा गंगाराम का प्राकट्य राजस्थान के झुंझनूं नगर में श्रावण शुक्ल दशमी सन् 1895 को श्री हरि विष्णु अंश से अग्रवंशीय वैश्य परिवार में पिता झूथारामजी एंव माता लक्ष्मीदेवी की गोद में हुआ था। जन्म से पूर्व ही इन्होंने अपने माता– पिता को विष्णुरूप में दर्शन देकर अपने दैविय गुणों का आभास करा दिया था। इनका प्रादुर्भाव होते ही हवेली में एक अलौकिक प्रकाश छा गया। झुंझनूं नगर के मध्य आज भी वह विशाल हवेली अपनी गवाही देती हुई खड़ी है, जहां बाबा ने अपने बाल्यकाल में लोगों को अपनी ईश्वरीय शक्तियों से उपकृत किया था। शुभाशुभ लक्षणों से उनके दिव्य गुणों का प्रकाश चारों ओर फैलने लगा। कुलपुरोहित ने बाबा के अलौकिक जन्म नक्षत्रों को देखकर बताया कि यह अवतारी बालक 'गंगा' के समान पाप विनाशक एंव 'राम' के समान पतितपावन होगा। अतएव इसका नाम 'गंगाराम' होगा। युवा होते होते उन्होंने अपने ज्ञान, दर्शन और आचरण से सबको चमत्कृत कर दिया। उनके देवोपम तेज से लोगों को दिव्य आनन्द की अनुभूति होती थी।

कर्मभूमि में दिव्य दर्शन

परन्तु बाबा गंगाराम को परिवार का वैभव, राजसी जीवन व हवेली की दीवारें रोक नहीं पाई और वे सात्विक वातावरण का प्रसारण करते हुये उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले में सफदरगंज नामक स्थान में पावन कल्याणी नदी के तट पर पधारे। उनके आगमन से बरसाती कल्याणी नदी एक बारहमासी नदी के रूप में बहने लगी। एक बार इसी नदी के जल में बाबा ने अपने विष्णुरूप का आभास भक्तों को कराया था। इसप्रकार अनेकों लीलायें करते हुये बाबा मात्र 43 वर्ष की अल्पायु में ही कल्याणी नदी के तट से स्वधाम प्रयाण कर गये। परन्तु धाम गमन के पूर्व अपने परमभक्त पुत्र देवकीनन्दन को अपनी इहलौकिक लीलाओं का माध्यम चुनकर उन्होने कहा था कि यह बालक देवकीनन्दन कलियुग में भक्ति का अमर इतिहास लिखेगा, मैं स्वधाम जा रहा हूं और देवलोक से अपने भक्तों को अभीष्ट फल प्रदान करूंगा। मेरी भक्ति और आराधना से सभी मनोरथ पूरे होगें।

स्वप्नादेश एवं झुंझनूं में श्री पंचदेव मंदिर का निर्माण

अपने विष्णुलोक गमन के करीब 30 वर्ष पश्चात् बाबा ने अपने परमप्रिय भक्त देवकीनन्दन को स्वप्न देकर आकाशवाणी के द्वारा श्री पंचदेव मंदिर की स्थापना का आदेश दिया। उक्त आदेश की

अनुपालना में भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन अपनी सहधर्मिणी गायत्रीदेवी के साथ झुंझनूं पधारे और गंगादशहरा सन् 1975 में झुंझनूं नगर में भव्य और विशाल श्री पंचदेव मंदिर की स्थापना करवाई, जिसका पावन पाटोत्सव पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेवजी महाराज के सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

जन आस्था का केन्द्र बना श्री पंचदेव मंदिर

झुंझनूं नगर के पूर्वी छोर पर सीकर–लोहारू राजमार्ग पर अवस्थित श्री पंचदेव मंदिर दूर से ही अपनी आभा का दर्शन करा देता है। प्राकृतिक हरितिमा से ओतप्रोत यहां का वातावरण लोगों का मन मोह लेता है। मंदिर में बाबा गंगाराम सहित भगवान शिव, आंजनेय हनुमान, भगवती दुर्गा और महालक्ष्मी के मंदिर मिलाकर कुल पांच मंदिर है, अतएव इस मंदिर का नाम ''श्री पंचदेव मंदिर'' विख्यात हुआ। बाबा की चित्ताकर्षक प्रतिमा के दर्शन करते ही मन में अपार शांति का संचार होता है और मन की समस्त कामनाए पूर्ण होती है। मंदिर परिसर में विशाल सभागार, सत्संग भवन, कूप, उद्यान एंव मेला ग्राउण्ड स्थित है।

भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन का अभूतपूर्व त्याग

मंदिर स्थापना के पश्चात भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन एवं उनकी धर्मपत्नी परम आराधिका माता गायत्री देवी को सांसारिक मोह–माया से विरक्ति हो गई एंव उन्होंने अपनी करोड़ों की सम्पदा, चल–अचल सम्पत्ति को त्याग कर सत्पात्रों में वितरित कर दिया और अपने आत्मांश दो पुत्र, चार पुत्रियां के साथ मंदिर परिसर को ही अपना संसार समझकर बाबा की सेवा में समर्पित हो गये। उनके सभी पुत्र पुत्रियों ने आजीवन विवाह न करने का संकल्प लेकर आज के इस भौतिकतावादी युग में एक नया इतिहास रच दिया। यहीं से वे सभी प्राणी भक्ति पथ पर अग्रसर होकर विश्वकल्याण के लिये प्रयासरत हैं।

भक्त देवकीनन्दन का महाप्रयाण व चिता पर चमत्कार

अन्ततः 21 अप्रेल 1992 (बैशाख कृष्ण चतुर्थी) को संसार को सत्य, त्याग एंव भक्ति का मार्ग दिखाने वाले भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन बाबा गंगाराम का नाम लेते–लेते अपना नश्वर शरीर त्याग देते हैं। जब उनके पार्थिव शरीर को पंचतत्व में विलीन किया जा रहा था, तो करूणा, प्रेम और दया की मूरत धर्मपत्नी गायत्री देवी ने सूर्य को साक्षी मानकर बाबा से भक्ति का प्रमाण संसार को दिखाने के लिये करूण प्रार्थना की। और उसी समय चिता पर अलौकिक चमत्कार दिखने लगे। भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन का दाहिना हाथ जलती चिता में उपर उठकर आर्शीवाद देता हुआ हिलने लगा, मस्तक से जल की धारा बहने लगी और चेहरा बालरूप में परिणित हो गया। जिसप्रकार रामभक्त हनुमान ने अपना सीना चीरकर सियाराम के दर्शन कराकर भक्ति का प्रमाण दिया था, उसीप्रकार भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन ने जलती चिता से अपने त्याग, तपस्या व निष्काम भक्ति का सशक्त प्रमाण जनता को दिया। आज के इस घोर कलियुग में ऐसा चमत्कार दिखाकर भक्ति की पराकाष्ठा को सिद्ध कर दिया। चिता पर हुये चमत्कारों के चित्र आज भी वहां उपलब्ध हैं।

परम आराधिका माता गायत्री देवी

परम आराधिका माता गायत्री देवी आध्यात्मिक शक्तियों से परिपूर्ण परम तपस्विनी थी। भक्त शिरोमणि देवकीनंदन के महाप्रयाण के पश्चात् मंदिर परिसर में अनवरत साधना में लीन रहते हुए उन्होंने लाखों भक्तों को उचित मार्गदर्शन व आशीर्वचन देकर उनका जीवन बदल दिया। वे करुणा, प्रेम, दया, परोपकार की साकार प्रतिमा एवं परम विदुषी थीं। सीता, अनुसुईया और सावित्री की भांति वे सत्य और त्याग की प्रतिमूर्ति थी। वे सदा भक्ति के चैतन्य लोक में रहती थी और प्रत्येक के हृदय की बात जानती थी। उनके मुख से जो भी निकला वो भक्तों के लिए मंत्र तुल्य हो गया। अन्ततः परम आराधिका माता गायत्री देवी मार्गशीर्ष शुक्ल दशमी दिनांक 29 नवम्बर 2017 को बाबा गंगाराम का मंत्र उच्चारित करते हुए सदैव के लिये बाबा की ज्योति में लीन हो गई। भक्त शिरोमणि श्री देवकीनंदन और परम आराधिका माता गायत्री देवी की कठोर साधना युगों–युगों तक भक्तों को आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करती रहेगी, मार्गदर्शन करती रहेगी।

समाधि की पावन रज

बाबा के मंदिर में जिस स्थान पर उक्त चमत्कार हुये, वहां भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन व परम आराधिका माता गायत्री देवी की पावन समाधि बनी हुई है। मंदिर में जाने वाले श्रद्धालू समाधि की परिक्रमा करते हैं और वहां की रज को प्रसाद स्वरूप अपने साथ ले जाते हैं। भक्तों के असाध्य कष्ट उक्त रज को लगाने से दूर होते हैं।

बाबा की महिमा को शब्दों में पिरोना सम्भव नही है। मंदिर में श्रावण शुक्ल दशमी को बाबा का जन्मोत्सव, ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को मंदिर का पाटोत्सव एंव बैशाख कृष्ण चतुर्थी को आर्शीवाद दिवस धूमधाम से मनाया जाता है। बाबा गंगाराम की कृपा से लाखों भक्तों के जीवन में अभूतपूर्व चमत्कार हुए हैं। बाबा के प्रति लोगों की आस्था का ही प्रतिफल है कि नगर–नगर में बाबा के भजन–कीर्तन, समारोह आयोजित किये जा रहे हैं। बाबा गंगाराम सेवा समिति के नाम से अनेकों सेवा संस्थान बाबा की महिमा के प्रचार प्रसार के अलावा सामाजिक व जनोपयोगी कार्यों में सदैव संलग्न रहते हैं। जो भी सच्चे हृदय से बाबा गंगाराम की आराधना करता है, बाबा उसकी समस्त मनोकामनायें अवश्य पूरी करते हैं।

———————————

www.babagangaram.com